52

जीवन का जल[1]

यूहन्ना 7:37-39, एक निकट दृष्टि

एवरेस्ट पर्वत संसार का सबसे ऊंचा पहाड़ है। हिमालय की पर्वत श्रृंखला में समुद्र तल से 29,028 फुट[2] की ऊंचाई पर स्थित यह पृथ्वी के वातावरण का दो तिहाई है। 1920 के आरम्भ तक, इसकी चोटी पर पहुंचने के कई प्रयास हो चुके थे। तीस वर्षों में, नौ प्रयास हुए थे, जो असफल रहे थे। 1952 में स्विस लोगों ने अत्यंत कुशल पर्वतारोहियों का एक दल बनाया। कई माह की तैयारी के बाद उन्होंने योजनाबद्ध ढंग से एवरेस्ट पर चढ़ने का काम किया, पर अन्त में तनाव और थकान के कारण उन्हें अपने प्रयास को बीच में ही छोड़ना पड़ा।

अगले वर्ष, बर्तानवी लोगों ने कर्नल जॉन हंट नामक एक डॉक्टर की अगुआई में एक टीम तैयार की। इस डॉक्टर ने स्विस लोगों के प्रयास का अध्ययन करने पर पाया कि प्रत्येक व्यक्ति को केवल दो गिलास पानी ही मिला था। उसने बर्फ पिघलाने वाला यन्त्र साथ ले लिया, ताकि उन्हें दिन में कम से कम बारह गिलास पानी के मिल सकें। 29 मई 1953 के दिन, संसार के सबसे ऊंचे पहाड़ की चोटी पर अपना झंडा फहराने वाला यह पहला प्रदर्शन बन गया।[3] पर्याप्त पानी की उपलब्धता के कारण यह सब सम्भव हो पाया।[4]

आज हम पानी के लाभकारी प्रभावों की फिर से खोज कर रहे हैं। अमेरिका में कॉफ़ी, चाय, और कोक पीने वाली हमारी पीढ़ी को बताया जा रहा है कि हमें अधिक से अधिक पानी पीना चाहिए। एक दिन में कम से कम 8 से 10 गिलास। डॉक्टर इस बात पर ज़ोर देते हैं कि हमारा स्वास्थ्य इसी पर निर्भर है।

जिस प्रकार हमारे शरीरों के लिए भौतिक पानी आवश्यक है, वैसे ही हमारी आत्माओं के लिए आत्मिक जल भी आवश्यक है। बाइबल के हमारे इस पाठ में इसी बात पर ज़ोर दिया गया है:

> फिर पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी। उस ने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था (यूहन्ना 7:37-39)।

सदियों पुरानी रीतियों को मसीह की रुकावट

मसीह की बातों को समझने के लिए पर्व और पर्व के समय पानी के संस्कार के बारे में कुछ जानकारी होनी आवश्यक है। इस पर्व को डेरों या झोंपड़ियों का पर्व कहा जाता था (यूहन्ना 7:2), और यह वर्ष के लिए यहूदियों का अन्तिम बड़ा समारोह था। समय के चक्र में यदि आप पीछे जाकर यहूदियों के किसी पर्व में जाएं, तो आपको सबसे अधिक आनन्द इसी में आएगा।

यह पर्व सितम्बर के अन्त या अक्तूबर के आरम्भ में आता था। यह यहूदियों के तीन बड़े पर्वों में से एक था,[5] जो एक ऐसा समय था, जिसमें संसार भर से यहूदी लोग यरूशलेम में आते थे। यह एक दिन का ही नहीं, बल्कि सात दिन चलने वाला समारोह होता था। प्रभु के समय तक एक और दिन अर्थात सब्त को जोड़ने से यह पर्व आठ दिन का हो गया था।

दूसरे यहूदी पर्वों की तरह, लोगों के लिए इस पर्व का भी महत्व था। पहले तो इसका *ऐतिहासिक* महत्व था, जिसमें इसे उस समय को स्मरण करने के लिए मनाया जाता था, जब उनके पूर्वज जंगल में घूमते थे (लैव्यव्यवस्था 23:43)। पर्व के दौरान यहूदी लोग घने वृक्षों की डालियों और खजूर के पत्तों से अपने हाथों से बनाए अस्थाई ढांचों अर्थात झोंपड़ियों में बाहर रहते थे (लैव्यव्यवस्था 23:40)।[6] ये ढांचे मन्दिर के आस-पास के क्षेत्र में और यरूशलेम में इर्द-गिर्द पहाड़ियों पर गलियों में और छतों पर होते थे। पिता और उनके पुत्र, माताएं और उनकी पुत्रियां, दादा-दादी और नाना-नानी सब इन झोंपड़ियों में रहते थे। सप्ताह भर वे यहीं सोते थे, यहीं खाते, यहीं प्रार्थना करते और यह ध्यान करते हुए कि किस प्रकार परमेश्वर ने जंगल के चालीस वर्षों के दौरान उनके लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया, वचन का अध्ययन करते थे।

यह पर्व अतीत में परमेश्वर द्वारा उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ही नहीं बल्कि वर्तमान में भी उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मनाया जाता था। इसका *कृषक* महत्व भी था: यह जौ, गेहूं, अंगूर की मुख्य फसलों की कटाई के बाद आने वाला पर्व था।[7] लोग भरपूर फसल के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते थे और आने वाले वर्ष में अपनी फसल के लिए उससे आशीष मांगते थे। संसार के सत्तर देशों के लिए सत्तर बैल बलिदान किए जाते थे। इन समारोहों में 446 याजक भाग लेते थे और इतने ही लेवी होते थे। मन्दिर के आंगनों में इक्कीस तुरहियां बजाई जाती थीं। स्त्रियों के आंगन में एक बड़ा शमादान लटका होता था, जिसकी तेज़ बत्तियों से मन्दिर के आस-पास का क्षेत्र जगमगा उठता था।[8] रात को लोग रोशनी में नाच करते थे। यहूदी पर्व के दिनों का यह सबसे उल्लासपूर्ण समय होता था![9]

अब इस पर्व के मुख्य कार्य अर्थात हर रोज़ पानी के संस्कार की बात करें। हर दिन सुबह, सफ़ेद वस्त्र पहने याजक मन्दिर से शीलोह के कुण्ड, जो गीहोन के सोते से मिलता था, तक पहाड़ी के नीचे जुलूस के आगे-आगे चलते थे।[10] यह पूरे शहर तक पानी पहुंचाने वाला मुख्य स्रोत अर्थात पीने के पानी का स्रोत था। कुण्ड पर पहुंचकर एक याजक सोने का मटका कुण्ड में डुबोता और उसे पानी से भरकर उठा लेता था। ऐसा करने के बाद, लोग

पुकार उठते थे, ''हम आनन्दपूर्वक उद्धार के सोतों से जल भरते हैं!'' (देखें यशायाह 12:3)।

फिर याजक वह घड़ा अपने सिर पर रखकर वापस मन्दिर की ओर जुलूस को ले चलता। चलते-चलते लोग भजन संहिता 113-118 गाते हुए ''हे यहोवा, विनती सुन उद्धार कर! हे यहोवा, विनती सुन सफलता दे! यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी करुणा सदा बनी रहेगी!'' (भजन सहिंता 118:25, 29) के साथ समाप्त करते। भीतरी आंगन के दक्षिण में जल नामक फाटक पर पहुंचने पर उनका स्वागत तीन तुरहियों के साथ किया जाता।

याजक होमबलि की वेदी तक चलकर जाता। हज़ारों लोगों द्वारा खजूर के पत्ते और वृक्षों की टहनियां हिलाते हुए वह मटके को ऊंचा उठाए रखता। फिर वह धीरे-धीरे पानी को चांदी की एक पीक में डाल देता, जिसमें से होकर यह भूमि पर बह जाता। लोग जयघोष करते और तुरहियां फूंकते।[11]

यह समारोह जंगल में परमेश्वर द्वारा पानी उपलब्ध करवाए जाने को याद करने के लिए मनाया जाता था, जब चट्टान में से पानी निकल आया था (निर्गमन 17;[12] गिनती 20; देखें व्यवस्थाविवरण 8:15; भजन संहिता 105:41)। यह देश की पानी की आवश्यकता को भी याद दिलाता था। इस क्षेत्र में मई से अक्तूबर तक बारिश होती भी थी जो वह बहुत कम थी। यदि पर्व के थोड़ी देर बाद बारिश न हो तो अगले वर्ष कोई फसल नहीं होती थी। इस प्रकार यह समारोह अतीत में परमेश्वर की सम्भाल के लिए धन्यवाद व भविष्य के लिए उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए याचना थी। इस परम्परा से बच्चे चकित होते, स्त्रियों के मन उल्लास और आनन्द से भरे होते और बूढ़ों में जोश आ जाता था। यह एक देखने योग्य दृश्य होता था।

इस उल्लासपूर्ण समारोह के मध्य ही यीशु खड़ा हुआ और पुकारकर कहने लगा (आयत 37क)। यह तथ्य कि वह खड़ा हुआ, महत्वपूर्ण है क्योंकि साधारणतया वह बैठकर उपदेश देता था (देखें यूहन्ना 8:2)। यह तथ्य कि वह पुकारकर कहने लगा और भी ध्यान देने योग्य है, क्योंकि कभी-कभी ही यह कहा गया है कि वह सिखाने के समय ऊंचे शब्द से बोलता था। तौ भी सबसे महत्वपूर्ण बात उसका संदेश थी: ''यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी'' (यूहन्ना 7:37ख, 38)।

मसीह के शब्द एक बाधा अर्थात चौंकाने वाली अप्रत्याशित रुकावट थे।[13] उसकी बात स्पष्ट और आघात पहुंचाने वाली थी। वास्तव में उसने उस प्राचीन समारोह के बारे में कहा था,[14] ''तुम्हें लगता है कि *इस* में जीवन है? नहीं, *मेरी* ओर देखो!'' वह लोगों को बताना चाहता था कि जीवन पुरानी परम्परा या पर्व में नहीं, बल्कि उसी में है।

पहली शताब्दी के लोगों को इस संदेश की आवश्यकता थी; इक्कीसवीं शताब्दी में भी इसकी आवश्यकता है। यदि हम सावधान नहीं हैं, तो हम यह सोचने लग सकते हैं कि हमारी आत्मिक सामर्थ हमें अपने *काम* से मिलती है। आराधना एक परम्परा से थोड़ा ऊपर

हो सकती है, जिसमें बाइबलें, गीतों की किताबें, प्रभु-भोज के बर्तन और चंदे की थैलियां मात्र हों।[15] हमारे लिए यह समझना आवश्यक है कि आराधना में किया जाने वाला कोई भी काम लक्ष्य को पाने का अर्थात प्रभु से भेंट करने का साधन मात्र है। वरना हम भावुकता में से अर्थात ध्यान से सुनने, गाने, खड़े होने, बैठने, अपने सिर झुकाने, सिर ऊपर उठाने जैसे काम करने के बावजूद भवन में से आत्मिक प्यासे रहकर निकल सकते हैं। यह प्यास केवल तभी बुझती है, जब आराधना हमें उस ''आत्मिक चट्टान'' अर्थात यीशु मसीह तक लाती है, जिसमें से जीवन का जल निकलता है (1 कुरिन्थियों 10:4)।

हम सभी को यूहन्ना 7:37-39 के संदेश की आवश्यकता है। आइए पहले हम यीशु की प्रतिज्ञाओं पर ध्यान दें। फिर उन प्रतिज्ञाओं को पाने के लिए आवश्यक शर्तों पर ध्यान देंगे।

जल की नदियां बहने की मसीह की प्रतिज्ञाएं

प्यासों को अपने पास आने का आग्रह करने के बाद, मसीह ने घोषणा की, ''जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी'' (आयत 38)। हम नहीं जानते कि उसके ध्यान में कौन सा वचन था। पुराने नियम में इन शब्दों वाला कोई विशेष पद नहीं है, परन्तु पुराने नियम के पदों में जिसमें यशायाह 44:3; 55:1; यहेजकेल 47:1-11 और जकर्याह 13:1; 14:8 शामिल हैं, यह विचार मिलता है। इस पद की एक और चुनौती यह है कि 37 और 38 आयतों में यूनानी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में अस्पष्टता है। किंग जेम्स और न्यू अमेरिकन स्टैण्डर्ड बाइबल के अनुवादों व कई दूसरे संस्करणों में,[16] ''*उसके* हृदय में से'' विश्वास के लिए है; परन्तु वाक्य में थोड़ा अन्तर करने पर इसका अर्थ जीवन के जल के स्रोत के रूप में यीशु ही मिलता है: ''यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी। उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, ...''[17] परन्तु ऐसे विवरण अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं। प्रभु की मुख्य बात तो स्पष्ट है। *उसके* पास आने वाले ही आत्मिक ताजगी पाएंगे:

(1) यीशु ने *जल* अर्थात आत्मिक जल देने की प्रतिज्ञा की है। इस प्रस्तुति के आरम्भ में हमने ध्यान दिया था कि लोग खाने में पानी के महत्व की खोज कर रहे हैं। हार्वर्ड[18] के एक फिज़ियोलोजिस्ट (शरीर विज्ञान-वेत्ता), डॉक्टर जी. सी. पिट्स ने पानी और शारीरिक सहनशीलता में सम्बन्ध पर एक प्रयोग किया। उन्होंने साढ़े तीन मील प्रति घण्टा की गति से चलने वाली पांव चक्की[19] पर पुरुष धावकों को चलाया। उन्हें तब तक चलते रहने के लिए कहा गया, जब तक कि वे थककर चूर न हो जाएं। वे साढ़े तीन घण्टे ही चल पाए। इस टैस्ट के दौरान एक दूसरे ग्रुप द्वारा उनके शरीरों में जलस्तर के लिए नज़र रखी गई। इन धावकों को उस स्तर को बनाए रखने के लिए आवश्यक पानी दिया गया। हर पन्द्रह मिनट के बाद उन्हें एक गिलास पानी दिया गया। दूसरा टैस्ट सात घण्टों बाद बन्द कर दिया गया, इसमें देखा गया कि भाग लेने वालों में थकान का कोई चिह्न नहीं मिला।

उन्होंने कहा कि वे तब तक चल सकते थे, जब तक डॉक्टर चाहे।

पानी और शारीरिक थकावट के सम्बन्ध की आत्मिक प्रासंगिकता है। बहुत से लोग जीवन की पांव चक्की को बिना आत्मिक नयेपन के वर्षों से घसीटते जा रहे हैं। उन्हें इस बात का अहसास होना आवश्यक है कि *मसीह* आत्मिक जल का स्रोत है, जिसे पाकर वे आगे बढ़ते रह सकते हैं।

(2) यीशु ने *जीवन का* जल देने की प्रतिज्ञा की है। उसका कहना है कि ''उसके हृदय में से *जीवन के* जल की नदियां बह निकलेंगी'' (यूहन्ना 7:38)।[20] इससे पहले, सामरिया में कुएं पर स्त्री को उसने बताया था, ''यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कहता है; मुझे पानी पिला तो तू उस से मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता'' (यूहन्ना 4:10)। जीवन का जल जीवन का सार है; अर्थात यह वह है, जिससे आत्मा तृप्त होती है। मसीह ने सामरी स्त्री को बताया था, ''परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा: वरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उस में एक सोता बन जाएगा, जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा'' (यूहन्ना 4:14)। जीवन का जल स्वर्ग के आनन्द का पूर्व-स्वाद है (प्रकाशितवाक्य 7:17; 21:6; 22:1, 17)।

(3) यीशु ने जीवन के जल की *नदियों* की प्रतिज्ञा की है। इस प्रतिज्ञा को फिर से देखें: ''उसके हृदय में से जीवन के जल की *नदियां* बह निकलेंगी'' (यूहन्ना 7:38)। ज़ोर उसके आत्मिक प्रावधान की भरपूरी पर दिया गया है। किसी ने ध्यान दिया है कि ''जल के कुएं'' की सामरी स्त्री से की गई प्रतिज्ञा अब ''जल की *नदियों*'' में बदल गई है।

समुद्र तल से 17,000 फुट ऊपर एंडिस पर्वत श्रृंखला में मुश्किल से एक फुट चौड़ा एक छोटा सा झरना शुरू होता है। चार हज़ार मील दूर जाकर यह संसार की सबसे शक्तिशाली नदी अमेज़ोन में गिरता है। अमेज़ोन से, 75 लाख क्यूबिक फुट प्रति सैकंड की दर से यह अटलांटिक महासागर में गिरता है। यदि उस पानी पर बांध बन जाए, तो उसके एक दिन के बहाव से न्यूयॉर्क शहर की नौ साल की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है।[21] पानी इतने बल से निकलता है कि समुद्र तक साठ मील चलकर भी यह ताज़ा रहता है। उस छोटे से नाले पर ध्यान दें, जो इतनी बड़ी नदी बन जाता है। फिर मसीहियत के छोटे से आरम्भ पर विचार करें, जो आशीष की इतनी ज़बर्दस्त नदियां बनकर संसार भर में फैल गई हैं।[22]

फिर, मैं कहता हूं कि ''नदियां'' शब्द मसीह द्वारा प्रस्तुत की गई आशिषों की *भरपूरी* को दिखाता है। उसने कहा कि वह ''इसलिए आया कि [लोग] जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं'' (यूहन्ना 10:10)।

यूहन्ना के अनुसार, यीशु के मन में प्रभु द्वारा दी जाने वाली एक विशेष आशीष थी: पवित्र आत्मा का दान। मसीह को यह कहते दिखाने के बाद कि ''उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी'' (यूहन्ना 7:38) इस प्रेरित ने परमेश्वर की प्रेरणा से यह व्याख्या जोड़ दी: ''उस ने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा,[23] जिसे उस पर विश्वास

करने वाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था'' (आयत 39)।

''आत्मा अब तक न उतरा था'' वाक्यांश की व्याख्या करनी आवश्यक है, क्योंकि यीशु की और उसके साथ काम करने वालों की सेवकाई में पवित्र आत्मा सक्रिय नहीं था (मत्ती 1:18, 20; 3:16; 4:1; 12:18, 28; लूका 1:15, 41, 67, 2:25-27; 4:1, 18; 10:21)। मसीह स्वर्ग पर उठाए जाने अर्थात परमेश्वर के दाहिने हाथ ''महिमा पाने'' (प्रेरितों 2:33; रोमियों 8:34; इफिसियों 1:20; कुलुस्सियों 3:1; इब्रानियों 1:3, 13; 10:12; 12:2; 1 पतरस 3:22) के बाद पवित्र आत्मा के भेजे जाने की बात कर रहा था (यूहन्ना 14:26; 15:26; 16:13)। वह विशेष अवसर जल्द ही आने वाला था।[24]

यूहन्ना 7:39 की सबसे अच्छी व्याख्या प्रेरितों के काम 1 और 2 अध्याय हैं। जी उठने के बाद यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया कि ''... जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तब तुम सामर्थ पाओगे'' (आयत 1:8क)। मसीह के स्वर्ग पर उठा लिए जाने के दस दिन बाद, यहूदियों के पिन्तेकुस्त के पर्व के दिन, वे बारहों ''पवित्र आत्मा से भर गए'' (प्रेरितों 2:1-4)। बाद में पतरस ने इसे पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के रूप में माना (प्रेरितों 11:15, 16)। फिर पिन्तेकुस्त के दिन, पतरस ने वहां उपस्थित लोगों से कहा, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)।

प्रेरितों को मिला आत्मा का दान चमत्कारी दान था; जबकि बपतिस्मा लेने वाले सब लोगों को मिला दान गैर चमत्कारी था (और है)। यह दान प्रभु की आज्ञा मानने वाले सब लोगों को दिया जाता है (प्रेरितों 5:32), अर्थात यह वह दान है, जो उन सब को दिया जाता है, जो उसके पुत्र और पुत्रियां हैं (गलातियों 4:6; इफिसियों 1:13, 14)। यह अपने बच्चों को दृढ़ करने के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में दिया गया दान है। रोमियों 8 अध्याय कुछ विशेष बातें बताता है: परमेश्वर का आत्मा हमें शरीर के कामों को मारने में सहायता करता है (आयत 13); वह हमारी निर्बलताओं में हमारी सहायता करता है (आयत 26); वह प्रार्थना करने में हमारी सहायता करता है (आयत 26)।[25] यूहन्ना 7:38, 39 की प्रतिज्ञा का एक परिपूरक, प्रेरितों 3:19 के शब्दों में सुझाया गया हर मसीही के लिए आत्मा का उपयुक्त विवरण शायद यह है कि वह हमें ''प्रभु के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन'' देता है।[26]

यूहन्ना 7:39 में वापस आएं, मुख्य शब्द ''विश्वास करने वाले'' हैं: ''उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर *विश्वास* करने वाले पाने वाले थे। ...'' उन प्रेरितों को जिन्होंने मसीह में विश्वास किया था, आत्मा का बपतिस्मा मिलना था। उनके प्रचार के द्वारा यीशु में विश्वास करने वालों को दान के रूप में पवित्र आत्मा मिलना था (प्रेरितों 2:36-38)। परन्तु प्रभु का विरोध करने वालों, अर्थात जिन्होंने उसमें विश्वास नहीं किया, का इस प्रतिज्ञा में कोई भाग नहीं था।

अपने प्यासों के लिए मसीह की शर्तें

हम यूहन्ना 7:37-39 की प्रतिज्ञाओं पर और बात कर सकते थे,[27] परन्तु अभी यह देखने का समय है कि इन प्रतिज्ञाओं को पाने के लिए क्या करना आवश्यक है। हमारे लिए इन्हें *मानना, स्वीकार करना और काम करना* आवश्यक है।

(1) हमारे लिए अपनी आवश्यकता को मानना आवश्यक है। यीशु ने यह कहते हुए संदेश आरम्भ किया कि ''*यदि कोई*[28] *प्यासा हो,* तो मेरे पास आकर पीये'' (यूहन्ना 7:37)। प्यास उसके सुनने वालों के लिए समझाने के लिए एक चित्र था। हम में से अधिकतर लोगों को वास्तव में पता भी नहीं है कि प्यास होती क्या है,[29] परन्तु वे जानते थे कि प्यास किसे कहते हैं। वे वार्षिक सूखे से अभी-अभी ही उबरे थे। हर साल मई के आरम्भ से, ऐसा लगता था जैसे बारिश कभी हुई ही न हो। यहां मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर और अक्तूबर के आरम्भ तक बारिश नहीं होती थी। यरूशलेम के पूर्व की तपती पहाड़ियों में ऐसे लगता था जैसे वे बंजर हों।[30] अरबी रेगिस्तान की तपती पूर्वी हवाओं से धूल शरीर के हर भाग को ढांप लेती थी। उस इलाके में रहने वाले लोग जानते थे कि जब भजन लिखने वाले ने जीभ तालू से चिपट जाने की बात की तो उसके कहने का क्या अर्थ था (भजन संहिता 137:6)। वे ''एक कटोरा ठण्डा पानी'' के लिए तरसने का अर्थ जानते थे (मत्ती 10:42)।

एक उच्च आत्मिक आवश्यकता की ओर ध्यान दिलाने के लिए मसीह मूल शारीरिक आवश्यकता का इस्तेमाल कर रहा था। पहाड़ी उपदेश में, उसने ''धर्म के'' भूखे और प्यासे होने की बात की (मत्ती 5:6)।[31] परमेश्वर के लिए प्यास हर मन में है, परन्तु लोगों ने इस आत्मिक लालसा को शक्ति, सम्पत्ति, भोग-विलास और प्रसिद्धि के साथ धुंधला करने की कोशिश की है।[32] परन्तु अन्त में इनसे आत्मा की प्यास वैसे ही बुझ सकती है, जैसे नमकीन पानी से शारीरिक प्यास।[33] आत्मा को केवल *प्रभु* ही तृप्त कर सकता है। उसके लिए पहली शर्त यह मानना है कि उसके बिना, हमारे अन्दर एक न मिटने वाली प्यास है।

(2) हमारे लिए यह मानना आवश्यक है कि केवल और केवल मसीह ही उस प्यास को बुझा सकता है। यह कहना ही काफ़ी नहीं है कि ''मैं प्यासा हूं,'' ताज़गी के स्रोत के रूप में यीशु को मानना भी आवश्यक है। प्रभु ने कहा, ''यदि कोई प्यासा हो तो *मेरे* पास आकर पीए। जो *मुझ* पर विश्वास करेगा, ... उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी'' (यूहन्ना 7:37, 38)।

आयत 38 में मसीह ने उसमें विश्वास करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। संदर्भ में, इसका अर्थ यहूदियों द्वारा उसे मसीहा के रूप में स्वीकार करना था। अगले अध्याय में उसने कहा, ''क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही [प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा] हूं, तो अपने पापों में मरोगे'' (यूहन्ना 8:24)। इसका अर्थ यह नहीं है कि उद्धार ''केवल विश्वास'' से होता है (देखें याकूब 2:24)।[34] यह कहने का अर्थ यह है कि हमारे विश्वास का केन्द्र यीशु ही होना आवश्यक है।

(3) हमारे लिए अपने विश्वास पर अमल करना आवश्यक है। इतना कहना ही

काफ़ी नहीं है कि हम प्यासे हैं; यह समझना भी काफ़ी नहीं है कि मसीह ही है, जो उस प्यास को बुझा सकता है; हमारे लिए प्रभु द्वारा किए गए प्रबन्ध का लाभ उठाने के लिए कुछ *करना* आवश्यक है। बाइबल का हमारा पाठ ''आए'' और ''पीए'' जैसे शब्दों से स्पष्ट हो जाता है। मसीह के पास आने का अर्थ उसे प्रभु के रूप में स्वीकार करना और अपने आप को उसकी इच्छा के सामने झुकाना है। पीने का अर्थ उसकी आशिषों में भाग लेना और उन्हें अपने अस्तित्व का भाग बनाना है। जब हम यीशु में विश्वास लाकर उसकी इच्छा को पूरा करते हैं, तो हम उसके भाग बन जाते हैं और वह हमारा भाग बन जाता है। गलातिया के मसीही लोगों को पौलुस ने लिखा था, ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने *मसीह को पहिन लिया है*'' (गलातियों 3:26, 27)।

एक शीतल, शुद्ध बहते पानी वाली एक बड़ी नदी की कल्पना करें। फिर इस नदी के किनारे-किनारे साफ़ किए गए मनुष्यों और पशुओं के कंकालों के ढेर की कल्पना करें, जो इस जीवनदायक चश्मे से कुछ ही दूरी पर प्यासे मर गए। ऐसी त्रासदी को भौतिक संसार में समझना कठिन होगा, परन्तु आत्मिक क्षेत्र में यह बात बहुत ही आम है। हज़ारों, बल्कि लाखों-करोड़ों लोग आत्मिक जल की कमी से मर गए हैं, जबकि यीशु अर्थात जीवन के जल का सोता उनके पास ही था। समस्या यह थी कि उन्होंने अपनी आत्मिक आवश्यकता की ओर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने उसमें भरोसा करके अपने जीवनों को उसे सौंपने से इनकार कर दिया, जिससे वे उस पानी को पीकर तृप्त हो पाते।

सारांश

आपकी क्या स्थिति है? क्या आप अपनी आत्मिक प्यास के बारे में जानते हैं? तो फिर आज ही मसीह के पास आने को न टालें। आपको पापों की क्षमा की आवश्यकता है? उसके पास आकर पीएं। आपको सामर्थ चाहिए? उसके पास आकर पीएं। आप चाहते हैं कि कोई ऐसा हो जो आपको समझने वाला हो, आपके पास खड़ा रहने वाला हो? उसके पास आकर पीएं। आपको अपना जीवन बदलने के लिए सामर्थ चाहिए? उसके पास आकर पीएं। आपको आत्मिक नयेपन की आवश्यकता है? उसके पास आकर पीएं। आपको जीवन में दिशा और उद्देश्य चाहिए? उसके पास आकर पीएं।

मैं इन पदों पर आधारित बच्चों की एक कहानी को इसके साथ जोड़ता हूं और आप अपनी आवश्यकता पर विचार करें तो यह कहानी सी. एस. लूईस की *द सिल्वर चेयर,* बुक 6 में उसके क्रॉनिकल्स ऑफ़ नैरनिया में मिलती है।[35]

जिल नामक एक छोटी लड़की ने अपने आप को एक जंगल में अकेला पाया। चलते-चलते उसे एक शेर मिल गया। उसने वही किया जो हम में से अधिकतर लोग करते; वह पीछे की ओर भागने लगी। वह भागती रही, भागती रही, और अन्त में थककर चूर हो गई और उसे बहुत प्यास लगी। उसे इतनी प्यास लगी थी कि उसे ध्यान ही नहीं रहा कि पानी पीने से पहले देख ले कि शेर उसे खा जाएगा। वह पानी के एक चश्मे के पास आई, पर

जहां थी वहीं जम गई; उसके सामने चश्मे पर शेर था। शेर ने जिल से बात की और कहा, ''यदि तुम्हें प्यास लगी है, तो पानी पी सकती हो।'' वह अवाक सी वैसे ही खड़ी रही।

''क्या तुम्हें प्यास नहीं लगी?'' शेर ने कहा।

''मैं प्यास से *मर रही* हूं,'' जिल ने कहा।

''तो फिर पी लो,'' शेर ने कहा ...।

''तुम वायदा करो कि यदि मैं आगे आऊं तो तुम मुझे कुछ नहीं करोगे?'' जिल ने कहा।

''मैं कोई वायदा नहीं करता,'' शेर ने कहा।

जिल का गला इतना सूख रहा था कि बिना यह ध्यान दिए, वह एक कदम आगे बढ़ गई।

''*क्या* तुम लड़कियों को खा जाते हो?'' उसने कहा

''मैंने लड़कियों और लड़कों, स्त्रियों और पुरुषों, राजाओं और सम्राटों, नगरों और साम्राज्यों को निगला है,'' शेर ने कहा। उसने यह बात न तो शेखी मारने के लिए, न क्षमा मांगने के लिए, और न ही क्रोध जताने के लिए की थी। बस कहना था और कह दिया।

''मैं आगे बढ़कर पानी नहीं पी सकती,'' जिल ने कहा।

''तो फिर जाओ मरो प्यासी,'' शेर ने कहा।

''अरे प्रिय!'' जिल ने एक कदम आगे बढ़ते हुए कहा। ''मेरे ख्याल से मुझे कोई दूसरा चश्मा ढूंढ़ना चाहिए।''

''और कोई चश्मा नहीं है,'' शेर ने कहा।

जिल को शेर की बात पर विश्वास हो गया-जो कि उसके खूंखार चेहरे को देखकर कोई भी नहीं कर सकता था-और अचानक वह मान गई। यह उसके जीवन का सबसे बुरा काम था, पर वह चश्मे की ओर आगे बढ़कर, झुककर अपने हाथ में पानी डालने लगी। इतना शीतल और ताज़गी देने वाला पानी उसने पहले कभी नहीं पीया था। आपको यह पानी पीने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि यह आपकी प्यास केवल एक बार ही बुझाता है।[36]

जिल की तरह, हम में से कई लोग जीवन में भाग रहे हैं-अपनी युवावस्था के वर्षों में, अपने तरुण वयस्क वर्षों में, अपने वयस्क वर्षों में या बुढ़ापे में[37]-और जितना हम चल चुके हैं, उतनी ही प्यास भी बढ़ी है। इस पाठ में, हमारा सामना ''यहूदा के गोत्र के सिंह'' से हुआ है (प्रकाशितवाक्य 5:5)। वह हम से भागना बन्द करने का आग्रह कर रहा है। वह हमें बता रहा है कि उससे अलग होकर हम अपनी आत्मिक प्यास कभी बुझा नहीं सकते। क्या आप कहते हैं, ''मैं कोई और चश्मा ढूंढ़ लूंगा''? कोई और चश्मा नहीं है। क्या आप कहते हैं, ''मुझे लगता है कि मैं मर जाऊंगा''? यदि आप उसके पास नहीं आते तो आप अवश्य मर *जाएंगे।* यदि आप भागकर थक गए हैं और प्यास से परेशान हैं, तो आप भी उसके पास आएं (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:36-38; गलातियों 3:26, 27)।[38]

टिप्पणियां

[1]मई 1987 में, जब मेरी पीठ का ऑपरेशन हुआ था और मैं आराम कर रहा था, फोर्ट वर्थ, टैक्सस में ब्राउन ट्रेल चर्च ऑफ़ क्राइस्ट में मेरी जगह रस्टी पीटरमैन ने काम किया और ''जीवन का जल'' पर वचन सुनाया। इस प्रवचन के लिए कई दूसरे स्रोतों से लिया गया, पर अधिकतर यह पीटरमैन के संदेश पर ही आधारित है। जहां कहीं टिप्पणी में नहीं दिया गया, वहां इसी प्रवचन से उदाहरण दिए गए हैं। [2]यह दूरी 8,848 मीटर है। [3]न्यूज़ीलैण्ड के सर एडमण्ड हिलेरी उस दल के प्रसिद्ध खोजी माने जाते हैं। [4]पहले, ऑक्सीजन की कम मात्रा, पहाड़ी हवाओं, और ऊंचाई की अत्यधिक सर्दी से निपटने के लिए विशेष औज़ार बनाए गए थे। ये सभी महत्वपूर्ण और आवश्यक थे, परन्तु पर्याप्त पानी का जुड़ना स्पष्टतया सफलता के लिए अन्तिम आवश्यक बात थी। [5]व्यवस्थाविवरण 16:16 में तीन पर्वों का उल्लेख है। दो अन्य मुख्य पर्व फसह (अखमीरी रोटी का पर्व) और पिन्तेकुस्त (अठवारों का पर्व) थे। ''मसीह का जीवन, भाग 1'' में पृष्ठ 79 पर ''यहूदियों के पर्व'' देखें। [6]बचपन में हम ऐसे ढांचों को देखते थे, जिन्हें ''झोंपड़ियां'' कहा जाता था। [7]इस कारण इसे बटोरन के पर्व के रूप में भी जाना जाता था (निर्गमन 23:16; 34:22)। [8]पर्व की परम्परा में, यह शमादान यहूदियों को आग के उस खम्भे का स्मरण दिलाता था, जिसने जंगल में उनके पूर्वजों की अगुआई की थी। [9]अर्थ की तीसरी परत का उल्लेख किया जा सकता है: सुलैमान का मन्दिर डेरों के पर्व के दौरान समर्पित किया गया था (1 राजा 8:2)। इस कारण मन्दिर पर पर्व के समारोह में विशेष ध्यान दिया जाता था। यद्यपि ज़ोर देने की दूसरी दो बड़ी बातों की तुलना में यह विशेषता कुछ भी नहीं है। [10]सोते और कुण्ड पर और जानकारी के लिए, इस पुस्तक में आगे ''शीलोह का कुण्ड'' और ''मैं अन्धा था और अब देखता हूं'' प्रवचन देखें।

[11]द *मिशनाह* में सुक्काह 4.1-5.6 में इस पर्व की गतिविधियों का वर्णन है। [12]आपको चाहिए कि निर्गमन 17 की कहानी की समीक्षा करें। [13]अपने सुनने वालों को उस आराधना सभा के दौरान जिसमें वे इकट्ठे होते हैं ऐसी ही किसी रुकावट के होने की कल्पना करने को कहें। [14]यीशु ने ये शब्द समारोह के दौरान कहे या बाद में, बताया नहीं गया है, और इसकी इतनी आवश्यकता भी नहीं है। जो भी हो, यह समारोह भीड़ के लोगों के मन में अभी ताज़ा ही होगा। [15]इस पद को अपने यहां की आराधना सभाओं के लिए लागू करें। यह स्पष्ट करें कि आपकी मंशा आराधना सेवाओं के दौरान होने वाली बातों की ओर ध्यान दिलाना नहीं है। आराधना वैसे ही होनी चाहिए, जैसे परमेश्वर ने बताया है (यूहन्ना 4:24)। परन्तु यदि कभी यह खोखली परम्परा बन जाती है, तो व्यर्थ है। [16]इन अनुवादों में NIV, RSV और NKJV शामिल हैं। [17]यद्यपि अनुवादकों द्वारा पहले अन्तर को प्राथमिकता दी जाती है, संदर्भ में दूसरा अच्छी तरह फिट बैठता है। उदाहरण के लिए, आयत 39 ''जल'' को पवित्र आत्मा के रूप में दिखाती है, जिसे यीशु ने भेजना था (देखें यूहन्ना 15:26)। [18]हार्वर्ड अमेरिका की एक प्रसिद्ध यूनिवर्सिटी है। [19]पांव चक्की एक बड़ी चलने वाली पेटी की मशीन है, जिस पर चला जा सकता है। पांव चक्कियों का इस्तेमाल प्रशिक्षण, स्वास्थ्य परीक्षणों (जैसे हार्ट के टैस्ट) और व्यायाम के लिए किया जाता है। [20]प्रभु सर्वदा ही बहते जल का सोता है (यिर्मयाह 2:13; 17:13)।

[21]न्यू यॉर्क नगर की जनसंख्या सत्तर लाख से अधिक है, जिसमें मैट्रो क्षेत्र में ही एक करोड़ अस्सी लाख से अधिक लोग रहते हैं। यदि आपके सुनने वाले न्यू यॉर्क नगर से परिचित नहीं हैं, तो उसकी जगह इतने बड़े महानगर के बारे में बताकर उसकी आवश्यकता बताएं। [22]प्रारम्भिक मसीही लेखक क्रूस पर यीशु की पसली से निकलने वाले लहू और पानी की बात करना पसन्द करते थे (यूहन्ना 19:34), यह कहते हुए कि पानी की एक बूंद आशीष की एक बड़ी नदी बन गई। [23]पानी की रस्म के साथ यह स्वाभाविक रूप से जुड़ा हुआ था, क्योंकि यहूदी विचार था कि पानी उण्डेलने का संकेत परमेश्वर के आत्मा के उण्डेलने की प्रतिज्ञा को प्रतिबिम्बित करता है। इस पर अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''यरूशलेम को जाना'' में देखें। [24]निश्चय ही, यूहन्ना के यह लिखने के समय, पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा का भेजा जाना अतीत की बात हो चला था। [25]इस प्रवचन का उद्देश्य बपतिस्मा पाने वाले हर विश्वासी को दिए जाने वाले पवित्र आत्मा के गैर चमत्कारी दान पर विस्तार में जाना नहीं है (जिसे पत्रियों में सामान्यतया एक वास के रूप

में कहा गया है: रोमियों 8:9, 11; 1 कुरिन्थियों 3:16; 2 तीमुथियुस 1:14; याकूब 4:5)। आवश्यकता हो तो आप इस भाग को विस्तार दे सकते हैं। [26]यह माना जाता है कि प्रेरितों 3:19 में पतरस की बात का अर्थ मुख्यतया प्रेरितों 2:38 की उसकी बात वाला ही होगा। यदि ऐसा है तो ''पवित्र आत्मा का दान'' ''विश्रान्ति के दिन'' के समान ही है। [27]यदि आयत 38 में वाक्यांश ''उसके हृदय'' विश्वासी के लिए है (जैसा कि अधिकतर अनुवादक मानते हैं), तो यह समाहित प्रतिज्ञा हो सकती है कि हम आशिषों से इतने भर जाएंगे कि हम से वे दूसरों की ओर बहेंगी। इस आयत में मसीह के मन में यह विशेष तौर पर था या नहीं, परन्तु यह अवधारणा सही है। [28]यीशु *सामूहिक* समारोह के बजाय *व्यक्तिगत* तौर पर ग्रहण करने की पुकार कर रहा था। [29]अपने अमेरिकी श्रोताओं के लिए प्रासंगिक बनाने के लिए, रस्टी पीटरमैन ने कहा, ''हम में से अधिकतर के लिए, प्यास का अर्थ पानी पीने के लिए जाने के लिए टीवी पर विज्ञापन आने की प्रतीक्षा करना है, या वाटरकूलर तक जाने के लिए आराधना की समाप्ति की प्रतीक्षा करना है।'' हो सकता है कि आप जहां रहते हैं, वहां लोग प्यास का अर्थ जानते हों या न; आवश्यकता के अनुसार प्रवचन के इस भाग का इस्तेमाल करें। [30]मेरे अधिकतर सुनने वालों ने चांद के बंजर तल की तस्वीरें देखी हैं। यदि आपके सुनने वालों ने नहीं देखीं तो किसी और तुलना का इस्तेमाल करें।

[31]अधिकतर पदों में प्यास को आत्मिक आवश्यकता की पहचान कराने के लिए एक रूपक के रूप में इस्तेमाल किया गया है (देखें भजन संहिता 42:1, 2; प्रकाशितवाक्य 22:17)। [32]इस पद को लेकर जहां आप रहते हैं, उसके अनुकूल बनाने के लिए विस्तार दें। [33]समुद्र में बह जाने वालों ने निराशा में समुद्री पानी पी लिया, यह तो बाद में पता चला कि वह पानी उनकी प्यास बुझाने के बजाय, बढ़ाने वाला खारा पानी था। यदि आपके सुनने वालों को यह एकरूपता समझ नहीं आती तो आप यिर्मयाह 2:13 का इस्तेमाल कर सकते हैं। प्रभु की आत्मिक ताज़गी के विकल्प ढूंढ़ने की कोशिश करते हुए, लोगों ने टूटे बर्तन बना लिए हैं, जिनमें पानी नहीं आएगा। [34]आप यह ध्यान दिलाएं कि उद्धार दिलाने वाला विश्वास आज्ञा मानने वाला विश्वास है (रोमियों 1:5; 16:26; गलातियों 5:6; याकूब 2:22)। विश्वास को मन फिराव तथा बपतिस्मे में व्यक्त करना आवश्यक है (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38; गलातियों 3:26, 27)। [35]सी.एस. लुईस, द *सिल्वर चेयर* (न्यू यॉर्क: हार्परट्रॉफी, हार्परकौलिंस पब्लिशर्स, 1981)-18-23. द क्रोनिकल ऑफ़ नारनिया में काफ़ी धार्मिक एकरूपता है। आपको निर्णय लेना है कि यह कहानी आपके सुनने वालों के लिए उपयुक्त है या नहीं। [36]वहीं, 22-23. [37]जहां आप रहते हैं, वहां जीवन के इन कालों की मुख्य गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण जोड़ सकते हैं। [38]इस निमन्त्रण में ज़ोर गैर मसीहियों पर है, पर जिन मसीहियों ने प्रभु के साथ अपने सम्बन्ध को नकार दिया है, उन्हें भी आत्मिक प्यास लगी हो सकती है। आप मसीही लोगों के अपने पहले वाले प्रेम में लौट आने पर ज़ोर देने की बात जोड़ सकते हैं (प्रकाशितवाक्य 2:4; प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।